संपादकीय

कुंभ में जब भेदभाव नहीं, बाकी समय क्यों

उत्तर प्रदेश सरकार दावा कर रही है, महाकुंभ में 66 करोड़ श्रद्धालुओं ने संगम में स्नान किया है। आस्था के इस महापर्व कुंभ में श्रद्धालुओं और भक्तों के बीच में किसी किस्म का कोई भेदभाव नहीं था। सभी एक ही घाट पर जाकर नहा रहे थे। कोई किसी की जात-पात नहीं पूछ रहा था। यहां कोई गरीब और अमीर भी नहीं था। आस्था के इस महापर्व मैं जब कोई भेदभाव नहीं था तो बाकी के समय भारत में जाति, धर्म, गरीब-अमीर का भेदभाव क्यों होता है। क्या यह हमारा दोहरा आचरण नहीं है। कहा जाता है कि धर्म आचरण में धारण करना होता है। नारे लगाने से अथवा धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने से धर्म नहीं आता है। धर्म आस्था से आता है, आस्था आचरण में होनी चाहिए। कुंभ के इस महापर्व मे प्रयागराज के त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाकर सही रास्ते पर चलने का भक्त संकल्प लेते हैं। भारत ने देश एवं दुनिया के देशों को महाकुंभ के इस आयोजन से यही संदेश दिया है। मानव समाज के बीच कोई भेदभाव नहीं हो सकता है। यदि हम इस बात को समझ जाएं और अपनी -अपनी परंपराओं के अनुसार धार्मिक आस्था को आचरण में लेकर आएं, तभी मानव संस्कृति और मानव समाज का विकास संभव हो सकता है। जनवरी और फरवरी माह में प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन हुआ। देश और विदेश से करोडों की संख्या में श्रद्धालु यहां पहुंचे। संगम तट पर सभी ने आस्था की डुबकी लगाई। गंगा और संगम में डुबकी लगाने से पाप धुलेंगे, यह संभव नहीं है। जो भी श्रद्धालु गंगा में डुबकी लगाने के लिए गए थे, उनके मन में आस्था का विश्वास था। गंगा में डुबकी लगाने के बाद उनके मन का मैल साफ होगा। उनके पाप कटेंगे, उनकी आत्मा और आचरण में शुद्धी आएगी। जिसके कारण वह परमात्मा की निकटता प्राप्त करेंगे। आस्था के कारण करोड़ों की संख्या में जो श्रद्धालु कुंभ पहुंचे हैं। उन्होंने तरह-तरह की तकलीफें और कष्ट झेले, कष्टों ने उन्हें प्रभावित नहीं किया। उनकी आस्था गंगा मैया में डुबकी लगाने की थी। उन्होंने डुबकी लगाकर यह सिद्ध कर दिया है। आस्था से वह जो पाना चाहते हैं, वह पाने में सफल होते हैं। कुंभ के आयोजन का इससे बड़ा अन्य कोई उदाहरण हो नहीं सकता है। महाकुंभ का यह पर्व भारतीय एकता का सबसे बड़ा संदेश है। जब बिना किसी भेदभाव के करोड़ों लोग एक स्थान पर पहुंचकर आपस में मिलकर अपनी आस्थाओं और परंपराओं के अनुसार धार्मिक आस्था के साथ बिना किसी भेदभाव के महापर्व को मनाते हैं। उन्होंने अपनी धार्मिक आस्था के अनुरूप इस महापर्व में उपस्थित होकर धर्म को अपनी आस्था को आचरण में शामिल किया। इस महाकुंभ से हम इतना ही सीख पाएं। बिना किसी भेदभाव के हम अपनी धार्मिक पारंपरिक एवं कुल की आस्थाओं के अनुसार मानव विकास और मानव समाज के उत्थान के लिए काम कर सकते हैं। यदि यह सृजनशीलता भारत के सभी लोगों में देखने को मिले, तो भारत का आर्थिक एवं सामाजिक विकास दुनिया के सभी देशों से ज्यादा बेहतर ढंग से होगा। भारतीय संस्कृति हमेशा से सबको साथ लेकर चलती है।



सच को छुपाने का परिणाम

एक बार की बात है। एक व्यक्ति का पुत्र कमाने के लिए विदेश गया। विदेश कमाने गए पुत्र ने अपने पिता को एक बहुत ही सुंदर अंगूठी भेजी। पत्र में उसने लिखा, पिताजी! आपको मैं एक अंगूठी भेज रहा हूं। उसका मूल्य है पांच हजार रुपए। मुझे सस्ते में मिल गई थी, इसलिए मैंने आपके लिए खरीद ली बेटे द्वारा भेजी गई अत्यंत सुंदर अंगूठी पाकर पिता प्रसन्न हो गया। पिता ने बड़े शौक से वह अंगूठी पहन ली। अंगूठी बहुत ही चमकदार और सुन्दर थी। बाजार में पिता को कई मित्र मिले। नई अंगूठी को देख कर सबने पूछा, यह कहां से आई पिता ने कहा, मेरे लड़के ने विदेश से भेजी है। इसे खरीदने में उसने पांच हजार रुपए खर्च किए पिता का एक मित्र बोला, क्या इसे बेचोगे? मैं इस अंगूठी के पचास हजार रुपये दूंगा।

पिता ने सोचा, पांच हजार की अंगूठी के पचास हजार रुपये मिल रहे हैं। इतने रुपयों में ऐसी दस अंगूठियां आ जाएंगी। उसने अंगूठी निकाल कर दे दी और अपने मित्र से पचास हजार रुपए ले लिए। फिर उसने पुत्र को पत्र लिखा, तुमने शुभ मुहूर्त में अंगूठी भेजी। उसे मैंने पचास हजार रुपए में बेच कर पैंतालीस हजार रुपए का लाभ अर्जित कर किया। लौटती डाक से पुत्र का पत्र आया, पिताजी! संकोच और भयवश मैंने आपको पिछले पत्र में सच्चाई नहीं लिखी थी। वह अंगूठी एक लाख की थी यह सत्य को झुठलाने का परिणाम था।

मानव जीवन में बढ़ती विज्ञान की भूमिका

देश में अन्य क्षेत्रों के अलावा विज्ञान के क्षेत्र में भी महिलाओं के योगदान के मद्देनजर उन्हें सम्मान देने के उद्देश्य से 2020 में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम रखी गई ह्यविज्ञान के क्षेत्र में महिलाएंह्न (वूमेन इन साइंस) ।राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का सबसे बड़ा उद्देश्य लोगों को हमारे दैनिक जीवन में विभिन्न वैज्ञानिक आविष्कारों की महत्ता से परिचित कराना होता है, इसके अलावा वैज्ञानिक सोच रखने वाले लोगों को अवसर उपलब्ध कराना तथा उन्हें उनके कार्य के लिए प्रोत्साहित करना भी इसका अहम उद्देश्य है। विज्ञान के विकास के लिए नई तकनीकों को लागू कर विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने जैसे उद्देश्य राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के आयोजन में निहित हैं।

(लेखक- योगेश कुमार गोयल/ ईएमएस)

मानव जीवन को विज्ञान ने आज बेहद आसान और सुविधाजनक बना दिया है। युवाओं की विज्ञान के प्रति आज के समय में कितनी रूचि है, इसी पर देश का भविष्य निर्भर करता है। युवाओं के साथ-साथ समाज के प्रत्येक वर्ग के दिलोदिमाग में विज्ञान के प्रति अधिकाधिक रूचि जागृत करने के लिए ही प्रतिवर्ष 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है। दरअसल इस दिवस के जरिये बच्चों को विज्ञान को बतौर कैरियर चुनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि देश की आने वाली पीढ़ी विज्ञान के क्षेत्र में अपना उल्लेखनीय योगदान दे सके और देश प्रगति के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर रहे। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार के लिए राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा भारत में 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में नामित करने के लिए वर्ष 1986 में भारत सरकार को कहा गया था और सरकार द्वारा इसे स्वीकृति प्रदान किए जाने के बाद से 28 फरवरी 1987 से प्रतिवर्ष इसी दिन भारतीय विज्ञान के क्षेत्र में एक महान कार्यक्रम के रूप में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता रहा है। यह दिवस भारत के महान वैज्ञानिक भौतिक शास्त्री सर सी. वी. रमन की खोज रमन प्रभाव को सदैव याद रखने और विश्व पटल पर विज्ञान के क्षेत्र में भारत का नाम रोशन करने वाले इस वैज्ञानिक को सम्मान देने के लिए उनकी स्मृति में मनाया जाता है। दरअसल सर सी वी रमन भौतिकी विज्ञान के क्षेत्र में पहले ऐसे भारतीय थे, जिन्होंने भारत में ऐसे आविष्कार पर शोध किया था।

पश्चिम बंगाल के कोलकाता में इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस में 1907 से 1933 तक सर चन्द्रशेखर वेंकट रमन ने कार्य किया था। उस दौरान उन्होंने भौतिकी के कई बिन्दुओं पर शोध किया था, जिसमें से रमन प्रभाव (प्रकाश के फैलने पर प्रभाव, जब विभिन्न वस्तुओं के द्वारा उसे गुजारा जाता है) उनकी महान सफलता और खोज बनी, जो न केवल विज्ञान जगत में लोकप्रिय हुआ बल्कि पूरी दुनिया ने उनकी इस खोज को सराहा। सर सी वी रमन की यह खोज 28 फरवरी 1928 को दुनिया के सामने आई थी, जिसके बाद पूरी दुनिया में उनकी इस खोज ने तहलका मचा दिया था। उनके इसी बड़े आविष्कार के लिए वर्ष 1930 में उन्हें भौतिकी के क्षेत्र में दुनिया का सबसे बड़ा माना जाने वाला नोबेल पुरस्कार दिया गया था। वे एशिया के ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होने का गौरव हासिल हुआ था। रमन प्रभाव खोज के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार के अलावा भी अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने के पश्चात भारत लौटने पर उन्होंने कहा था कि मेरे जैसे न जाने कितने ही रमन सुविधाओं और अवसरों के अभाव में यूं ही अपनी प्रतिभा गंवा देते हैं, जिससे केवल उनका ही नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष का नुकसान है, जिसे हमें रोकना होगा। वर्ष 2013 से अमेरिकन केमिकल सोसायटी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय ऐतिहासिक केमिकल लैंडमार्क के रूप में रमन प्रभाव को नामित किया गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस प्रतिवर्ष एक निर्धारित थीम के तहत मनाया जाता है। 2025 के राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम है विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना। 2024 में यह दिवस विकसित भारत के लिए स्वदेशी तकनीक और 2023 में वैश्विक भलाई के लिए वैश्विक विज्ञान थीम के साथ मनाया गया था। वर्ष 2022 की थीम थी सतत भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एकीकृत दृष्टिकोण और वर्ष 2021 की थीम थी एसटीआई का भविष्य : शिक्षा कौशल और कार्य का प्रभाव। एसटीअई का अर्थ है साइंस, टैक्नोलॉजी एंड इनोवेशन। यह विषय शिक्षा कौशल और कार्य पर विज्ञान, प्रोद्यौगिकी और नवाचार (एसटीअई) के भविष्य में पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डालता है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की वर्ष 1999 से लेकर अब तक की थीम पर नजर डालें तो वर्ष 1999 का विषय था हमारी बदलती धरती। वर्ष 2000 का विषय था मूल विज्ञान में रूचि उत्पन्न करना, 2001 का विज्ञान शिक्षा के लिए सूचना तकनीक, 2002 का पश्चिम से धन, 2003 का जीवन की रूपरेखा : 50 साल का डीएनए और 25 वर्ष का आईवीएफ, 2004 का समुदाय में वैज्ञानिक जागरूकता को बढ़ावा देना, 2005 का भौतिकी को मानना, 2006 का हमारे भविष्य के लिए प्रकृति की परवरिश करें, 2007 का प्रति द्रव्य पर ज्यादा फसल, 2008 का पृथ्वी ग्रह को समझना, 2009 का विज्ञान की सीमा को बढ़ाना, 2010 का दीर्घकालिक विकास के लिए लैंगिक समानता, विज्ञान और तकनीक, 2011 का दैनिक जीवन में रसायन, 2012 का स्वच्छ ऊर्जा विकल्प और परमाणु सुरक्षा, 2013 का अनुवांशिक संशोधित फसल और खाद्य सुरक्षा, 2014 का वैज्ञानिक मनोवृत्ति को प्रोत्साहित करना, 2015 का राष्ट्र निर्माण के लिए विज्ञान, 2016 का देश के विकास के लिए वैज्ञानिक मुद्दों पर सार्वजनिक प्रशंसा बढ़ाने के लक्ष्य, 2017 का विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकलांग व्यक्तियों के लिए, 2018 का एक सतत भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा वर्ष 2019 का राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का विषय लोगों के लिए विज्ञान और विज्ञान के लिए लोग था। देश में अन्य क्षेत्रों के अलावा विज्ञान के क्षेत्र में भी महिलाओं के योगदान के मद्देनजर उन्हें सम्मान देने के उद्देश्य से 2020 में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम रखी गई विज्ञान के क्षेत्र में महिलाएं (वूमेन इन साइंस)।राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का सबसे बड़ा उद्देश्य लोगों को हमारे दैनिक जीवन में विभिन्न वैज्ञानिक आविष्कारों की महत्ता से परिचित कराना होता है, इसके अलावा वैज्ञानिक सोच रखने वाले लोगों को अवसर उपलब्ध कराना तथा उन्हें उनके कार्य के लिए प्रोत्साहित करना भी इसका अहम उद्देश्य है। विज्ञान के विकास के लिए नई तकनीकों को लागू कर विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने जैसे उद्देश्य राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के आयोजन में निहित हैं। विज्ञान के जरिये ही वैज्ञानिकों ने नई-नई तरह की तकनीकों का आविष्कार किया है और वैज्ञानिकों ने इन खोजों के जरिये मानव जीवन को बहुत बेहतर बना दिया है। इसी विज्ञान के जरिये हम रोबोट, कम्प्यूटर इत्यादि बनाने में सफलता प्राप्त करने के अलावा अंतरिक्ष तक में पहुंच गए हैं और असंभव दिखने वाले कार्यों को भी विज्ञान की मदद से ही संभव बनाते रहे हैं। विज्ञान की मदद से ही बनाई गई प्रतिदिन बहुत सारी तकनीकों और वस्तुओं का इस्तेमाल हम अपने दैनिक क्रियाकलापों में करते भी हैं। ऐसे में हम सभी के लिए हमारे जीवन में विज्ञान के महत्व को समझना बेहद जरूरी है। हमारा समाज 21वीं सदी में जिस प्रकार अंधविश्वासों के साये में जीता है, ऐसे में विज्ञान की महत्ता समझते हुए समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करते हुए इन अंधविश्वासों के निर्मूलन की जिम्मेदार हम सबकी है।

(लेखक के निजी विचार हैं।)

बिहार की सत्ता किसका आहार बनेगी?

(लेखक- राकेश अचल / ईएमएस)

शीर्षक चौंकाने वाला जरूर है लेकिन है हकीकत के ठीक करीब। दरअसल अगली छमाही में होने वाले विधानसभा चुनाव के जरिये सत्ता हथियाने के लिए सबसे ज्यादा भाजपा लालायित है। भाजपा अब गबरू जवान पार्टी है। पूरे 45 में चल रही है और बिहार की सत्ता का स्वाद उसे अभी तक नहीं मिला है ,मिला भी है तो पूरा नहीं मिला। बिहार से कांग्रेस को भी सत्ता से हटे कोई 34 साल हो चले हैं ,लेकिन कांग्रेस ने भाजपा की तरह बिहार की सत्ता के अपहरण की कोई कोशिश अब तक नहीं की है। बिहार में चुनाव से ठीक पहले जेडीयू-भाजपा गठबंधन की सरकार के अंतिम मंत्रिमडलीय फेरबदल ने साफ कर दिया है कि आगे क्या होने वाला है ?

नीतीश कुमार मंत्रिमंडल के अंतिम फेरबदल में 7 नए मंत्री शामिल किये गए,लेकिन इनमें नीतीश बाबू की अपनी पार्टी का एक भी सदस्य नहीं है। जाहिर है कि नीतीश बाबू एक असहाय मुख्यमंत्री हैं और उन्हें भाजपा के इशारों पर कठपुतली नृत्य करना पड़ रहा है। इस समय नीतीश बाबू की स्थिति सांप-छछूंदर जैसी हो गयी है। वे न भाजपा का साथ छोड़ सकते हैं और न साथ रह सकते हैं ,क्योंकि साथ रहने में जेडीयू के हर सदस्य का दम घुट रहा है।साफ दिखाई दे रहा है कि भाजपा नीतीश बाबू को बिहार का एकनाथ शिंदे बनाने जा रही है ,लेकिन क्या नीतीश बाबू इतनी आसानी से अपनी कुबार्नी दे देंगे ,इसमें मुझे और मेरे जैसे तमाम लोगों को संदेह है।



आपको याद होगा कि नितीश बाबू जेपी आंदोलन की पैदाइश हैं। वे पहली बार 3 मार्च 2000 को मुख्यमंत्री बने थे किन्तु केवल 7 दिन के लिए। उन्हें दोबारा मुख्यमंत्री बनने के लिए 3 साल 360 दिन की लम्बी प्रतीक्षा करना पड़ी थी। दूसरी बार नीतीश बाबू 8 साल 177 दिन तक मुख्य मंत्री रह पाए लेकिन उनकी बैशखियाँ बदलती रहीं। उन्हें 20 मई 2014 को 278 दिन के लिए अपना सिंघासन जीतन राम माझी को सौंपना पड़ा ,लेकिन सत्ता के बिना एक पल न रह पाने वाले नीयतीश बाबू शांत नहीं बैठे और 22 फरवरी 2015 को दोबारा मुख्यमंत्री बन गए। तब से अब तक दस साल तो निकल चुके हैं ,लेकिन अब उनका सत्ता में बने रहना संदिग्ध दिखाई दे रहा है।

बिहार के लिए नीतीश बाबू एक जरूरत हैं या एक मजबूरी, ये तय कर पाना मुश्किल है ,क्योंकि वे इतनी करवटें बदलते हैं कि उन्हें कोई पल्टूराम कहता है तो कोई गिरगिट। 2025 में प्रस्तावित बिहार विधानसभा के चुनाव से ठीक पहले नीतीश बाबू एक और करवट नहीं लेंगे ,इसकी कोई गारंटी नहीं है । फिलहाल वे भाजपा के साथ हैं और नतमस्तक भी हैं ,लेकिन भाजपा नितीश बाबू को भविष्य में मुख्यमंत्री बनते नहीं देखना चाहती। भाजपा की कोशिश है कि इस बार बिहार उसका हो। हरियाणा,महाराष्ट्र और दिल्ली जीतने के बाद भाजपा का हौसला बढ़ा हुआ है। इस बार सनातन के नव-जागरण का सेहरा भी भाजपा ने महाकुम्भ की कथित कामयाबी के साथ ही अपने सर पर बांध लिया है। इसलिए भाजपा नीतीश बाबू को अपनी शर्तों पर नचा रही है।

राजनीति में भविष्यवाणी से ज्यादा अटकलें काम करती हैं और सही भी साबित होतीं है। मेरा अनुमान ये है कि बिहार विधानसभा चुनाव से पहले या तो जेडीयू टूट जाएगी या फिर नीतीश बाबो खुद भाजपा छोड़ एक बार फिर राजद के साथ खड़े नजर आएंगे ,क्योंकि उन्हें अब अपने नहीं ,बल्कि अपने बेटे निशांत के भविष्य की चिंता है। निशांत पहली बार राज्य की राजनीति में सक्रिय हुए हैं और उन्होंने आते ही अपने पिता को दोबारा मुख्यमंत्री बनाने के लिए लॉबिंग करना शुरू कर दिया है। हालाँकि भाजपा संसद संजय जायसवाल ने कहा है कि नीतीश बाबू ही मुख्यमंत्री का चेहरा होंगे लेकिन कोई संजय की बात पर यकीन करने को तैयार नहीं है।

बार की राजनीति कुछ-कुछ झारखण्ड की राजनीति से मिलती जुलती है। झारखण्ड में हाल ही के विधानसभा चुनाव में भाजपा पराजित होकर निकली है। वहां आईएनडीआईए गठबंधन की जीत हुई है ,लेकिन भाजपा बिहार को झारखंड नहीं बनने देना चाहती। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह कीपूरी कोशिश है की इस बार हर हाल में बिहार में भाजपा की सरकार बनना चाहिए अन्यथा भाजपा का चक्रवर्ती बनने का सपना यहीं टूट जाएगा। बिहार में आईएनडीआईए गठबंधन फिलहाल मजबूत स्थिति में है। कांग्रेस को बिहार की सत्ता नहीं चाहिए। कांग्रेस केवल और केवल भाजपा को बिहार की सत्ता से दूर रखने के लिए गठबंधन में कोई भी जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार दिखाई दे रही है। उसे राजद से कोई शिकायत है नहीं और सीट बंटवारे को लेकर भी कांग्रेस राजद से मोलभाव करने की स्थिति में नहीं है।

भाजपा के साथ गठबंधन में शामिल जीतनराम माझी और चिराग पासवान अभी मौन है। दोनों सत्ता सुख लेना चाहते हैं। बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा इन दलित नेताओं के साथ कैसा बर्ताव करती है ये अभी तय नहीं है। भाजपा के लिए ये दोनों भरोसेमंद सहयगी नहीं हैं। ये दोनों हवा का रुख देखकर अपनी भूमिका का चयन करने वाले लोग हैं। यदि चिराग को राजद सत्ता में आती दिखी तो वे राजद के साथ खड़े होने में कोई संकोच नहीं करेंगे और यदि उन्हें भाजपा का पलड़ा भारी होता दिखा तो वे भाजपा में ही बिना किसी ना-नुकर के बने रहेंगे। चिराग के पास दलदबदल की एक बड़ी थाती है। उनके पिता राम विलास पासवान अपने समयके सबसे बड़े दलबदलू माने जाते थे। अब देखते हैं कि भगवान बुद्ध की साधना स्थली बिहार में भाजपा बिहार होता है या नहीं?

(लेखक के निजी विचार हैं।)

रहमत, बरकत और फजीलत का महीना है रमजान

(लेखक - मुस्ताअली बोहरा/ईएमएस)

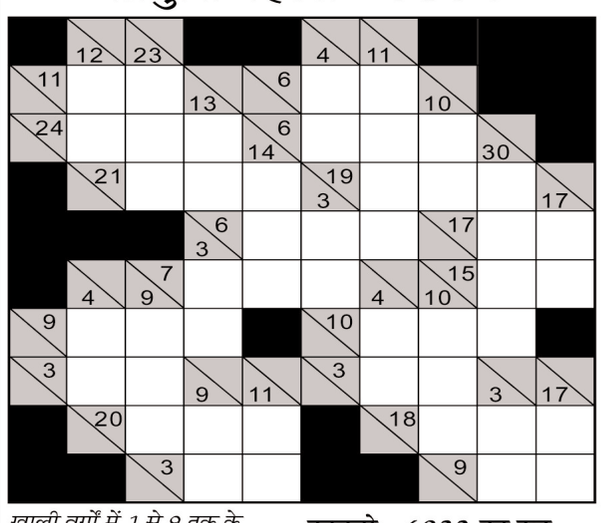
इस्लाम के पांच फर्ज में से एक है रोजा रखना। जो पांच फर्ज हैं उनमें कलमा (अल्लाह को एक मानना), नमाज, जकात (दान), रोजा और हज (मक्का में काबा) शामिल हैं। रमजान को पाक महीना भी कहा जाता और माना जाता है ये महीना रब को इंसान से और इंसान को रब से जोड़ता है। माना जाता है कि इस्लामिक कैलेंडर के नौंवे महीने रमजान में रोजा रखने की शुरूआत दूसरी हिजरी में हुई है। इस्लामी कैलेंडर चांद की स्थितियों के आधार पर चलता है। हिजरी कैलेंडर की शुरूआत 622 ई. में हुई थी, जब हजरत मुहम्मद साहब मक्का से मदीना गए थे। इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार रमजान एक महीने का नाम है, जो शाबान के महीने के बाद आता है। यह महीना आठ महीने के बाद यानि नौवें नंबर पर आता है। चांद देखकर रमजान की शुरूआत होती है और चांद देखकर ही ईद मनाई जाती है। अमूमन, सबसे पहले सऊदी अरब में रमजान या फिर ईद का चांद नजर आता है। कुरान की दूसरी आयत सूरह अल बकरा में कहा गया है कि रोजा तुम पर उसी तरह का फर्ज है जैसे तुम से पहले की उम्मत पर फर्ज था। कहा जाता है कि पैगंबर साहब के हिजरत कर मदीना पहुंचने के एक साल बाद मुस्लिम समुदाय के लोगों को रोजा रखने का हुक्म मिला। तब रोजा रखे जाने की परंपरा की शुरूआत दूसरी हिजरी में हुई। रमजान का पाक महीना हर मुसलमान के लिए बेहद खास माना जाता है। रोजे को अरबी में सौम कहा जाता है, इसलिए इस मास को अरबी में माह-ए-सियाम भी कहा जाता हैं। सोम का मतलब होता है संयम, रोजदार अपने मन और शरीर को वश में कर नमाज पढ़ता है और खुदा की इबादत करता है। फारसी में उपवास को रोजा कहते हैं। रमजान चांद दिखने पर शुरू होता है और उसके अगले दिन से रोजा रखा जाता है। रमजान की महीने को भागों में बांटा गया है, जिसे अशरा कहा जाता है। रमजान के हर अशरे का अलग महत्व है। अशरा अरबी का शब्द है, जिसका मतलब 10 होता है। इस तरह रमजान के महीने के 30 दिनों को 10-10 दिनों में बांटा गया है. जिन्हें पहला अशरा, दूसरा अशरा और तीसरा अशरा कहा जाता है। शुरूआती 10 दिन पहला अशरा कहलाते हैं, 11वें दिन से 20वें दिन तक दूसरा अशरा और 21वें दिन से 29वें या 30वें दिन तक तीसरा अशरा होता है। रमजान के मुकद्दस महीने का खास महत्व है। कुरान शरीफ में बताए नियमों का पालन करते हुए जो रोजा रखते हुए खुदा की इबादत करते है उन्हें 70 गुना सवाब यानी पुण्य मिलता है। कई देशों में रमजान के महीने को कुरान का महीना भी कहा जाता है। रमजान महीने के पहले दस दिनों को रहमत के दिन कहा जाता है। कहा जाता है कि इन दस दिनों में मुसलमान जितने नेक काम करता है, जरूरतमंदों की मदद करता है अल्लाह उस पर रहमत करता है। दूसरे अशरे को मगफिरत यानी माफी का अशरा कहा जाता है। ये अशरा 11वें रोजे से 20वें रोजे तक चलता है। माना जाता है कि इसमें अल्लाह की इबादत करके अगर सच्चे मन से अपने गुनाहों की माफी मांगी जाए तो अल्लाह गुनाहों को माफ कर देता है। तीसरे अशरे को बेहद अहम माना जाता है। ये जहन्नम की आग से खुद को बचाने के लिए है। रमजान के आखिरी अशरे में कई मुस्लिम पुरूष और औरतें एतकाफ में बैठते हैं। माना जाता है कि एतकाफ में बैठने वाले लोगों पर अल्लाह की विशेष रहमत होती है। एतकाफ के दौरान दस दिनों तक एक ही स्थान पर बैठते हैं, वहीं सोते हैं, खाते हैं और इबादत करते हैं। मुस्लिम पुरुष मस्जिद में एक जगह बैठकर अल्लाह की इबादत करते हैं, जबकि महिलाएं घर के किसी कमरे में पर्दा लगाकर एतकाफ में बैठती हैं।

रमजान...एक ऐसा बा-बरकत महीना है जिसका इंतेजार साल के ग्यारह महीने हर मुसलमान को रहता है। रोजा केवल भूखे प्यासे रहने का नाम नहीं है। रोजा आंख से मतलब बुरा मत देखो, कान से गलत बात न सुनो, मुंह से अपशब्द न निकले, हाथ से अच्छा काम ही हो, पांव सिर्फ अच्छाई की राह पर चले। कुल मिलाकर बुराई से बचने और भलाई के रास्ते पर चलने का नाम रोजा है। यह महीना गरीब और जरूरतमंद बंदों के साथ हमदर्दी का है। इस महीने में रोजादार को इफ्तार कराने वाले के गुनाह माफ हो जाते हैं। पैगम्बर मुहम्मद सल्ल. से आपके किसी सहाबी ने पूछा यदि हममें से किसी के पास इतनी गुंजाइश न हो क्या करें। तो हजरत मुहम्मद ने जवाब दिया कि एक खजूर या पानी से ही इफ्तार करा दिया जाए। यह महीना मुस्तहिक लोगों की मदद करने का महीना है। गरीब और जरूरतमंद चाहे वह किसी भी मजहब के क्यों न हो, उनकी मदद करने की नसीहत दी गयी है। रमजान के महीने में तमाम मुस्लिम लोग जकात देते हैं। बता दें कि जकात का मतलब अल्लाह की राह में अपनी आमदनी से कुछ हिस्सा गरीबों में देना होता है। जकात, सदका, फितरा, खैर खरात, गरीबों और जरुरतमंद हैं उनकी मदद करना जरूरी समझा और माना जाता है। अपनी जरूरीयात को कम करना और दूसरों की जरूरीयात को पूरा करना अपने गुनाहों को कम और नेकियों को ज्यादा कर देता है। रोजा परहेजगारी पैदा करता है। रोजा का मतलब तकवा यानी खुद को बुराई से बचाना और भलाई के काम करना है। मुस्लिम मान्यताओं के मुताबिक पवित्र कुरान इसी महीने नाजिल हुआ था यानी आसमान से उतरा था। रमजान में इबादत खास महत्व माना जाता है। रमजान में गुनाहों की माफी होती है और अल्लाह रहमतों का दरवाजा अपने बंदों के लिए खोलता है।

(लेखक के निजी विचार हैं।)

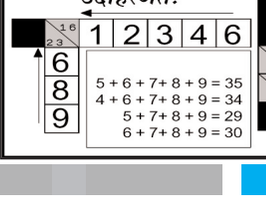
काकुरो पहेली

काकुरो पहेली - 6834

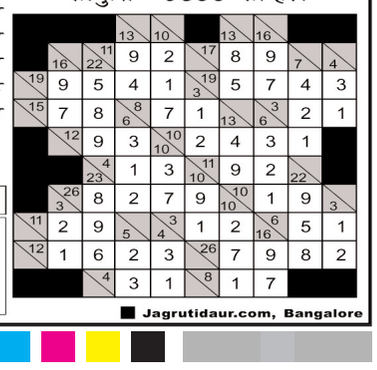


खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः



काकुरो - 6833 का हल



Jagrutidaur.com, Bangalore